RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-08
August-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i08.008

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल–काव्य में बालकों का मनोविनोद

डॉ0 संजय कुमार

हिन्दी विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–812002 (बिहार)

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल–काव्य एक विशिष्ठ सांस्कृतिक सम्पन्नता, प्रज्ञात्मक, कल्पना एवं सूक्ष्म लयात्मक संवेदना से प्रेरित और सम्पुष्ट है। निश्चिय ही बालक ईश्वर की अनुपम कृति है। उसके शरीर में ईश्वरीय सौन्दर्य निहित होता है। बालक धनिक परिवार का हो या निर्धन परिवार का हो या उच्च वर्ग का हो या निम्न वर्ग का, सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। उसमें विश्व बन्धुत्व, मानव प्रेम, स्पष्टवादिता, सत्य कथन आदि उच्च कोटि की भावनाओं की झलक दिखाई देती है। उसके हृदय में देश, जाति, वर्ग तथा सम्प्रदाय से संबंधित भेदभाव नहीं होता। उनका जीवन तो कुंभकाट के चाक पर चढ़े हुए उस मिट्टी के कच्चे पात्र की भांति होता है, जिसे कुंभकार जिस रूप में ढालना चाहे, ढाल सकता है। बालक भी जैसे–जैसे बड़ों के सम्पर्क में आता है, बड़ों के संस्कार, गुण तथा दोष उसमें आने लगते हैं।

संस्कृत आचार्यों ने काव्य रचना के विभिन्न प्रयोजन गिनाये हैं, जिनमें आचार्य मम्मट के काव्य प्रयोजन परवर्ती आचार्यों का मान्य रहे हैं। आचार्य मम्मट ने काव्य को प्रयोजन की आधारशिला पर कसते हुए काव्य रचना के छः प्रयोजन बताये हैं– "यश की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान की प्राप्ति, अमंगल का विनाश तुरन्त परमानन्द की प्राप्ति और प्रियतमा के समान उपदेश। हिन्दी बाल–काव्य रचना के भी ये ही प्रयोजन माने जा सकते है।"[1]

कला, जीवन और जगत् के यथार्थ सौन्दर्य की भावात्मक अभिव्यक्ति होती है। मानव स्वभाव से ही सौन्दर्य तथा कला का प्रेमी होता है। सौन्दर्य के दो पक्ष होते हैं, प्रथम रंजक पक्ष और द्वितीय आध्यात्मिक पक्ष। कला के रजक पक्ष का संबंध मानव के हृदय से होता है। आध्यात्मिक पक्ष का संबंध उसकी आत्मा से होता है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल–काव्य का अध्ययन उद्देश्य की दृष्टि से किया जाये, तब इस काव्य का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य बालकों का मनोविनोद करना ही प्रतीत होता है, जो कला, कला के लिए बाल सिद्धांत में आता है। खेलना मनोरंजन करना एवं ऐसे क्रीड़ा–कौतुक करना, जिनसे उन्हें आनन्द की प्राप्ति हो– बालकों को सबसे अधिक रूचिकर होता है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल–काव्य में ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं, जिन्हें पढ़कर बालकों का ही नहीं बड़ों का भी मनोरंजन होता है। बालकों को लड्डू अत्यधिक प्रिय होते हैं। पूजा से पहले किसी भी बालक को लड्डू नहीं मिल सकते। बनते हुए लड्डूओं को देखकर उनके मुख में पानी भर आता है। उस समय यदि उन्हें लड्डूओं से संबंधित कोई बात बताई जाये तो बड़ी जल्दी में समझ में आ जाती है और वे शान्तिपूर्वक पूजा के पश्चात् प्रसाद के लड्डूओं की प्रतीक्षा करने लगते हैं। प्रस्तुत पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :–

"जय मेरे लड्डू भगवान!
सूरज लड्डू, चन्दा लड्डू,
गोल–गोल दुनियाँ भी लड्डू,
गोल–गोल तुम भी गेंद समान।"[2]

बालक विनोद प्रिय होता है। उसे ऐसे खेल खेलना अच्छे लगते हैं, जो उन्हें हंसाने वाले हों। छोटी आयु में भी वे ताली बजा–बजाकर पक्षियों से बात करते हैं, चन्दा मामा को देखते हैं और रंग–बिरंगे फूलों को देखकर प्रसन्न होते हैं। उन्हें अपने प्रतिद्वंद्वियों को परास्त होता हुआ देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। हिन्दी के बाल कवि ने 'आजू–राजू' नामक दो बालकों के माध्यम से कितना सुन्दर विनोद प्रस्तुत किया है, यह निम्नलिखित पंक्तियों में दर्शनीय है :–

"आजू–राजू दोनों दो – दो गुब्बारे ले आये,
माँ को पास बिठाकर अगडू–झगडू दो बनवाये।
पेट बड़ा सा छोटा सा सिर बिल्कुल ढीलमढालू,
जैसे लाल टमाटर पर हो रक्खा छोटा आलू।
निकली तब तक हवा पिचक कर गिरे भूमि पर झगडू,
रहे देखते बड़ी देर तक आँखे फाड़े अगडू।"[3]

बालिकाओं को गुड्डे–गुड़िया का खेल बहुत अच्छा लगता है। इन खेलों के माध्यम से वो आनन्द प्राप्ति के साथ–साथ अपने भावी जीवन की रूपरेखा भी बनाते हैं। बालिका अपनी गुड़ियों को सेठानी के समान सजाती हैं, उनका विवाह वे किसी पढ़े–लिखे दिखने वाले गुड्डे से करना चाहती हैं, परन्तु उनके गुड्डों में से कुछ के तो सिर ही हैं, कुछ चाबी खाकर चलते हैं, कुछ के पैर लड़खड़ाते हैं, भला बाल–अभिभाविका अपने गुड़िया का विवाह किससे करें यही समस्या है। प्रस्तुत पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं :–

"मेरी गुड़िया बड़ी सयानी, पढ़कर आयी है हल्दानी,
सूरत से लगती सेठानी, दिन भर सुनती नई कहानी।
उसके पीले हाथ करूंगी, अब उसकी शादी कर दूंगी।
गुड्डे बिना पढ़े मिलते हैं, कुछ गुड्डों के सिर हिलते हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कुछ चाबी खाकर चलते हैं, कुछ के पाँव फिसल पड़ते हैं।
ऐसे का तो नाम न लूंगी, अब उसकी शादी कर दूंगी।"[4]

नन्हें–मुन्नों को बंदर और बंदरिया का नाच देखना भी अच्छा लगता है, जब बन्दर सूट पहनकर, चश्मा लटकाकर, हैट पहनकर, हाथ में छड़ी लेकर आगे–आगे चलता है और उसकी सहचरी बंदरिया लहँगा–फरिया पहनकर, ओढ़नी से सिर ढक्कर, पैरों में घूंघरू बांधकर उसके पीछे चलती है, तब बालकों की टोलियाँ दौड़कर आ जाती हैं और उनका नाच और उनके रूठने और मनाने के अभिनय को देखने के लिए आतुर होने लगती हैं। कभी–कभी बंदर हाथ में किताब लेकर पढ़ने का भी अभिनय करते हैं। निम्नलिखित कविता में एक बंदर मिडिल पास करके अपने घर पहुँचता है और अपने आपको गांव के सभी लोगों से श्रेष्ठ समझता हैं जब उनसे पाठ पढ़ने के लिए कहा जाता है तो उसकी कलई खुल जाती है। निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :–

"मिडिल पास कर बंदर बाबू पहुँचे अपने गांव,
उन्हें गर्व था क्यों रखते वे अब जमीन पर पांव।
साथी बोले हमें सुनाओं अपना कोई पाठ,
बंदर बाबू का उत्तर था, सोलह दूनी आठ।"[5]

निष्कर्ष :

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी बाल–काव्य एक अत्यंत सार्थक काव्य है, जिसमें बालकों के विभिन्न कार्य–कलापों का वर्णन नहीं मिलता, बल्कि उनके मूल में बालकों के भावी जीवन से संबंधित काव्य हैं, जो उनके व्यक्तित्व को एक नयी दिशा प्रदान करती है।

संदर्भ–सूची

[1]. काव्यं यशसेअर्थ कृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतपे। 'काव्य प्रकाश', प्रथम उल्लास साहिका, पृ0–05.
[2]. 'हिन्दी बाल–काव्य एक अविराम यात्रा', रामेश्वर दयाल दुबे, पृ0–08.
[3]. हिन्द बाल–गीत साहित्य : इतिहास एवं समीक्षा, होरीलाल शर्मा 'नीरव', पृ0–249.
[4]. बाल गीत–साहित्य : इतिहास एवं समीक्षा, कल्याण कुमार जैन, पृ0–250.
[5]. हिन्दी बाल गीत साहित्य इतिहास, नारायण पाल परमार, पृ0–275.

RRIJM 2015, All Rights Reserved